रुद्राष्टकम्

Rudrashtakam – संस्कृत, हिंदी अर्थ सहित

॥ श्रीरुद्राष्टकम् ॥

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं
विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम् ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम् ॥१ ॥

अर्थ: हे ईशान! आप मोक्षस्वरूप, सर्वसमर्थ, सब जगह व्याप्त, ब्रह्म और वेदों के साक्षात रूप हैं। आप अपने आप में स्थित, गुणों से परे, भेद-रहित और इच्छा-रहित हैं। चेतना के आकाश रूप और आकाश को ही वस्त्र बनाने वाले (दिगंबर) आप शिव को मैं प्रणाम करता हूँ और भजता हूँ।

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं
गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशम् ।
करालं महाकाल कालं कृपालं
गुणागार संसारपारं नतोऽहम् ॥२ ॥

अर्थ: जो निराकार हैं, ओंकार के मूल हैं, जाग्रत-स्वप्न-सुषुप्ति से परे तुरीय अवस्था हैं, जो वाणी, ज्ञान और इंद्रियों की पहुँच से बाहर हैं, कैलाशपति हैं, जो काल के भी काल महाकाल होकर भी कृपालु हैं, गुणों के भंडार हैं और संसार से पार ले जाने वाले हैं, उन्हें मैं नमन करता हूँ।

तुषाराद्रि संकाश गौरं गंभीरं
मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरम् ।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा
लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा ॥३ ॥

अर्थ: जो हिमालय के समान गोरे और गंभीर हैं, जिनके शरीर में करोड़ों कामदेवों जैसी कांति है, जिनके सिर पर लहराती सुंदर गंगा शोभित है, ललाट पर बाल चंद्रमा चमक रहा है और कंठ में सर्प लिपटे हैं।

चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं
प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालम् ।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥४ ॥

अर्थ: जिनके कानों में कुंडल हिल रहे हैं, सुंदर भौंहें और बड़े-बड़े नेत्र हैं, जिनका मुख प्रसन्न है, कंठ नीला है और जो अत्यंत दयालु हैं, जो सिंह की खाल पहनते हैं और मुंडों की माला धारण करते हैं, उन सबके स्वामी प्रिय शंकर को मैं भजता हूँ।

प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं
अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशम् ।
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम् ॥५ ॥

अर्थ: जो प्रचंड, सबसे श्रेष्ठ, तेजस्वी और परमेश्वर हैं, जो अखंड, अजन्मे और करोड़ों सूर्यों के समान प्रकाशमान हैं, जो तीनों प्रकार के दुखों (दैहिक, दैविक, भौतिक) को जड़ से मिटाते हैं और हाथ में त्रिशूल धारण करते हैं, केवल प्रेम-भाव से पाए जाने वाले उन भवानीपति को मैं भजता हूँ।

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी
सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ।
चिदानंदसंदोह मोहापहारी
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥६ ॥

अर्थ: हे प्रभु! आप कलाओं (समय के खंडों) से परे, कल्याणस्वरूप और कल्प के अंत में प्रलय करने वाले हैं। आप सज्जनों को सदा आनंद देते हैं और त्रिपुरासुर के शत्रु हैं। आप चेतना और आनंद के भंडार हैं और मोह को हरने वाले हैं। हे कामदेव के शत्रु! मुझ पर प्रसन्न होइए, प्रसन्न होइए।

न यावद् उमानाथ पादारविंदं
भजंतीह लोके परे वा नराणाम् ।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम् ॥७ ॥

अर्थ: हे उमापति! जब तक मनुष्य आपके चरण-कमलों का भजन नहीं करते, तब तक उन्हें न इस लोक में और न परलोक में सुख-शांति मिलती है और न उनके कष्टों का नाश होता है। हे सब प्राणियों के हृदय में बसने वाले प्रभु! मुझ पर प्रसन्न होइए।

न जानामि योगं जपं नैव पूजां
नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यम् ।
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं
प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो ॥८ ॥

अर्थ: हे शंभु! मैं न योग जानता हूँ, न जप और न ही पूजा की विधि। मैं तो बस हर समय आपको प्रणाम करता हूँ। बुढ़ापे, जन्म और दुखों के समूह से तपते हुए इस शरणागत की, हे प्रभु, हे ईश्वर, आप रक्षा कीजिए।

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥९ ॥

अर्थ: यह रुद्राष्टक एक ब्राह्मण ने भगवान हर (शिव) को प्रसन्न करने के लिए कहा था। जो मनुष्य इसे भक्ति के साथ पढ़ते हैं, भगवान शंभु उन पर प्रसन्न होते हैं।

॥ इति श्रीगोस्वामितुलसीदासकृतं श्रीरुद्राष्टकं सम्पूर्णम् ॥

chalisa-pdf.com

Rudrashtakam Lyrics in English

Namamishamishana nirvana-rupam
Vibhum vyapakam brahma-veda-svarupam
Nijam nirgunam nirvikalpam niriham
Chidakasham-akasha-vasam bhaje-ham ||1||

Nirakaram-omkara-mulam turiyam
Gira jnana gotitam-isham girisham
Karalam mahakala kalam kripalam
Gunagara samsara-param nato-ham ||2||

Tusharadri sankasha gauram gambhiram
Manobhuta koti prabha shri shariram
Sphuran-mauli kallolini charu ganga
Lasad-bhala-balendu kanthe bhujanga ||3||

Chalat-kundalam bhru sunetram vishalam
Prasannananam nilakantham dayalam
Mrigadhisha-charmambaram munda-malam
Priyam shankaram sarva-natham bhajami ||4||

Prachandam prakrishtam pragalbham paresham
Akhandam ajam bhanu-koti-prakasham
Trayah shula nirmulanam shulapanim
Bhaje-ham bhavani-patim bhava-gamyam ||5||

Kalatita kalyana kalpanta-kari
Sada sajjananda-data purari
Chidananda-sandoha mohapahari
Prasida prasida prabho manmathari ||6||

Na yavad umanatha padaravindam
Bhajantiha loke pare va naranam
Na tavat sukham shanti santapa-nasham
Prasida prabho sarva-bhutadhivasam ||7||

Na janami yogam japam naiva pujam
Nato-ham sada sarvada shambhu tubhyam
Jara janma duhkhaugha tatapyamanam
Prabho pahi apannam-amisha shambho ||8||

Rudrashtakam-idam proktam viprena haratoshaye
Ye pathanti nara bhaktya tesham shambhuh prasidati ||9||

chalisa-pdf.com

chalisa-pdf.com